प्रेस-विज्ञप्ति

- मीडिया कर्मियों का आंतरिक सशक्तिकरण
- ब्रह्माकुमारीज़ का आयोजन
- मीडिया की खबरों से शान्ति की स्थापना हो - सुमीत अवस्थी
- मीडिया कर्मी सोशल मीडिया का मोहरा न बने - सुमीत अवस्थी

भिलाई नगर,2 जुलाई 2017- मुझ भाषण करने की नहीं टांग खोंचने की आदत है। कितना सरल और सहज इस संस्था में मुझे अभी 5-6 घंटे से ज्यादा हो गये है, लेकिन कोई चिंता समस्या नहीं है। कोई पिता यह नहीं सिखाता की गलत करो, लेकिन आज की भाग दौड़ और काम्पीटीशन में मां बाप की शिक्षाओं का भूल जाते है। बॉस को खुश रखने के लिए घर वालों से भी लड़ते है। आज देश का हर नागरिक एक पत्रकार है क्योंकि आज सबके पास सोशल मोडिया है जिसके माध्यम से वह अपने मनोभावों को व्यक्त करता है, लेकिन इसका का उपयोग अपने विवेक को जगाकर करना चाहिए। सोशल मोडिया में जो भी करते है उसकी सत्यता को जानकर परखकर ही यूज करें। उक्त उद्गार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एंव इसकी सहयोगी संस्था राजयोगा एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउन्डेशन के मीडिया प्रभाग द्वारा **''मीडिया कर्मियों का आंतरिक सशक्तिकरण-समय की आवश्यकता ''** विषय पर सेक्टर-7, सड़क-2 के पीस ऑडिटोरियम् में आयोजित मीडिया महासम्मेलन में दिल्ली से पधारे मुख्य वक्ता सुमोत अवस्थी जी ,न्यूज 18 इंडिया ने कहा। आगे आपने बताया कि हमको संभालने की जिम्मेवारी हमारी स्वयं की है। विश्व में नकारात्मकता के लिए मोडिया को दोष दिया जाता है। जोकि अपनी मर्यादाओं को ताक पर रखकर समाचार का प्रसारण करते हैं। हमारे पास कोई जादू की छड़ी नहीं है। अपने आप को चेक करे कि मैं कहा पर खड़ा हूं यदि मैं पांच लोगों को तंग करता हूं। जोकि आसान है लेकिन मैं एक को सुखी करता हूं तो मेरे जीवन का उद्देश्य पूरा होता है। यह तभी संभव है जब मैं अपने आत्मबल से अपने को मजबूत कर अपना आंतरिक सशक्तिकरण करता हूं। मीडिया क्षेत्र में जो युवा है उन्हें निर्भिक रहना है और हालात से समझौता नहीं करना है। आंखों और कानों से देख सुनकर ही समाचार प्रसारित करना है। और जो मैं बोल रहा हूं वो सही है। आज की जनता मीडिया की भी टांग खींचती है। चुनाव के समय हमें मेहनत नहीं करनी पड़ती, आसानी से न्यूज मिल जाती है। मीडिया की खबरों से शान्ति की स्थापना हो न कि दंगे भडके। सोशल मीडिया का मोहरा न बने, किसी भी खबर को फारवड करने से पहले अपने विवेक एवं बुद्धिमता का प्रयोग करें। मोडिया को अपना दायित्व निभाने का समय आ गया है। स्पॉट से रिपोटिंग करे। आत्म निरीक्षण करे कि हमारी खबर से किसी को आर्थिक, राजनैतिक लाभ तो नहीं हो रहा। आज सोशल मोडिया मजबूत होता जा रहा है। हमारी जवाबदारी दस गुना बढ़ेगी। आज टी.वी. ऐंकर एक एक्टर है लेकिन पत्रकार एक शक्ति है।

सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का विधिवत् उद्घाटन किया गया। सुरेन्द्र सिंह कैम्बो जी अध्यक्ष, अल्पसंख्यक आयोग ने कहा कि यहां के अनुभव को आत्मसात करे तथा इस आयोजन के लिए ब्रह्माकुमारीज़ का धन्यवाद किया।

डॉ. मानसिंह परमार जी, कुलपति कुशाभाऊ ठाकरे विश्वविद्यालय, रायपुर ने कहा कि आज दुनिया के नकारात्मक कुएं से कोई ग्लास से, कोई बाल्टी से और तो कोई मोटर से खींचकर दूसरों को फारवर्ड कर रहा है, इसके स्त्रोत का बंद करना है। मोडिया के विद्यार्थी गलत खबरों से बचें। हमें किसी दबाव में काम नहीं करना है। मोडिया के लिए यह टर्निंग प्वाइंट का समय है। मोडिया पर कोई उंगली न उठाये ऐसी विश्वसनीयता कायम करनी है। दिल्ली, मुंबई ही भारत नहीं है, छत्तीसगढ़ विकास का गढ़ है, नक्सलियों का नहीं। आर्टिफिशियल खबरे विवादों का जन्म देती है। इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रभाव जल्दी पड़ता है। आज समाधान, आशावादी और राष्ट्रवादी से पत्रकारिता का ग्राफ बढ़ रहा है। कबीर की दो लाइने न काहु से दोस्ती, न काहु से बैर पत्रकारिता का मजबूत बनाती है।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी विश्व विद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर कमल दीक्षित ने कहा कि अभी की मोडिया का फोल्ड बहुत ही कठिन हो गया ह। पहले की तुलना में अभी नवजवान पत्रकार को भी बहुत से मानसिक तनाव है। जिसके कारण मोडिया कर्मियों को भी हाई बी.पी., हार्ट आदि की बीमारीयां पाई जाती है। पत्रकारिता में दो चीजों का बहुत महत्व है पहला रचनात्मकता, दूसरा मानसिक ऊर्जा । ये दानों तभी आ पायेंगे जब मन बलवान होगा और मन का बलवान बनाने के लिए आध्यात्मिकता एवं राजयोग की भूमिका महत्वपूर्ण है।

गोविंद लाल वोरा, प्रधान संपादक, अमृत संदेश ने कहा कि जनता से जुडनें से ही एक पत्रकार सही तरीके से सशक्त हो सकता है। पत्रकार सशक्त होंगे तभी प्रजातंत्र सशक्त होगा। पत्रकार संयमित होकर लिखें, लिखने की स्वतंत्रता पर किसी की चरित्र हत्या न हो। आज़ादी के समय हस्तलिखित पत्र आंदोलन का केन्द्र बिन्दु हुआ करता था।

रमेश नैयर, पूर्व निर्देशक, छत्तीसगढ़ हिन्दी ग्रंथ अकादमी ने अपने अनुभवों का सुनाते हुए कहा कि एक पत्रकार को अंदर से सशक्त होने की बहुत आवश्यकता होती है। तभी वह कठिन परिस्थितियों में अन्याय के विरूद्ध आवाज उठा सकता है।

ब्रह्माकुमारी प्राची बहन ने मीडिया में मी यानि मुझे आंतरिक सशक्तिकरण पर ध्यान देना है। डी यानी डिटैच होकर अपना कर्म करना है, या यानी याद अपनी पहचान की, से सम्पूर्ण मिडिया बनता है। इस दुनिया में बातें न आये ये तो असंभव है लेकिन बातों को हम किस रूप में लेते है यह हमारी मन की शक्ति पर निर्भर करता है। तत्पश्चात् ब्रह्माकुमारी तारिका ने राजयोग मेडिटेशन कराकर सकारात्मक ऊर्जा से सभी मीडिया सदस्यों को मानसिक शांति एवं शक्तियों से चार्ज किया।

भिलाई सेवोकेन्द्रों की मुख्य संचालिका ब्रह्माकुमारी आशा ने कहा कि मीडिया सबसे शक्तिशाली है क्यांकि मीडिया से सभी प्रेम करते है और डरते भी है लेकिन मीडियाकर्मियों का अंदर से सशक्त होना बहुत जरूरी है।

कार्यक्रम का सुंदर मंच संचालन ब्रह्माकुमारी माधुरी ने किया। इस अवसर पर मीडिया कर्मियों हेतु पांच दिवसीय राजयोग अनुभूति शिविर का आयोजन दिनांक 03 जुलाई से प्रातः 11 से 12 बजे से सेक्टर-7, सड़क-2 के पीस ऑडिटोरियम् पर किया गया है। इस कार्यक्रम में भिलाई-दुर्ग सहित राजनांदगांव, पाटन, बेमेतरा, अहिवारा, डौंडीलोहारा और मनेन्द्रगढ़ के प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के सदस्य बड़ी संख्या में भाग लिये।

प्रेषक

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
राजयोग भवन,सडक-2,सेक्टर-7, भिलाई नगर
(ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग)